आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:28-11-14

ज्ञान और भक्ति का एक्युरेंट फर्क समझाकर, हमें आप समान मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आया है तुम बच्चों को भक्ति तू आत्मा से ज्ञानी तू आत्मा बनाने, पतित से पावन बनाने.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों का भक्ति और ज्ञान का अंतर, अलग-अलग उदाहरणों देकर के समझाया है जिसे की हम समझकर औरों को भी समझा सके और दूसरों का भी कल्याण करें.

- बाबा ने कहा भक्ति मार्ग में भी तुम अपने को आत्मा तो समझते थे, परन्तु फिर कोई ने कहा तुम परमात्मा हो. यह किसने तुम्हें बतलाया? इन भक्ति मार्ग के गुरुओं और शास्त्रों ने. सतयुग में तो कोई बतलायेंगे नहीं. अभी परमात्मा-बाप ने समझाया है तुम मेरे बच्चे हो.

- बाबा ने कहा भक्ति में आत्मा में ज्ञान नहीं है तो अज्ञान चक्षु है. अभी बाप ज्ञान चक्षु देते हैं. बाप आते है तो आत्मा को ज्ञान चक्षु मिलते हैं.

- बाबा कहते है भक्ति में तुम भगवान को नहीं जानते थे. अभी तुम समझते हो बाप (परमात्मा शिव) ने यह ब्रह्मा का शरीर धारण किया है. बाप (परमात्मा) ही आकर खुद अपना राज (razz) बताते है और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का राज (razz) भी बताते हैं.

- बाबा कहते है भक्ति में भी तुम यह जानते थे की यह मनुष्य सृष्टि एक नाटक है और सृष्टि का चक्र फिरता है. परन्तु कैसे फिरता है यह बाप ही आकर तुम्हें बताते हैं. रचयिता स्वयं आकर तुम्हें अपना और सारी रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान तुम्हें देते हैं. बाकी तो सब है भक्ति.

- बाबा कहते है बाप ही आकर तुमको ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं. आगे तुम भक्ति तू आत्मा थे. तुम आत्मा भक्ति करते थे. अभी तुम आत्मा ज्ञान सूनते हो.

- बाबा कहते है भक्ति को कहा जाता है अन्धियारा. ऐसे नहीं कहेंगे भक्ति से भगवान मिलता है. बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है. तुम जानते हो हम भक्ति करते थे तो कोई सुख नहीं था. भक्ति करते धक्का खाते रहते थे. बाप को ढूँढते थे. अभी ज्ञान में आने से तुम समझते हो यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि जो कुछ करते थे, ढूँढ़ते-ढूँढ़ते धक्का खाते-खाते तंग हो जाते है.

- बाबा कहते है भक्ति में गिरते-गिरते तुम्हारी आत्मा बिल्कुल तमोप्रधान - पतित बन जाती हैं. ऐसे नहीं कि पावन होने के लिए भक्ति करते थे. भगवान से पावन बनने बिगर तुम्हारी आत्मा पावन दुनिया में जा नहीं सकेगी.

- बाबा कहते है भक्ति में तुम भगवान को पुकारते थे आकर पावन बनाओ. पतित आत्माये ही भगवान से मिलती है पावन बनने के लिए. ज्ञान में तुमने जाना है की पावन आत्माओं (सतयुग के देवी-देवता) को तो भगवान मिलता ही नहीं. भगवान आकरके तुम पतितों को पावन बनाते हैं और तुम फिर यह शरीर छोड़ देते हो. पावन बनकर तुम सतयुग में चले जायेंगे और बाप भी तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते हैं. बाबा का पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है.

- बाबा कहते है भक्ति में तुम चाहते हो, फलाने का चैतन्य में साक्षात्कार हो. अच्छा, चैतन्य में देखते हो फिर क्या? साक्षात्कार हुआ फिर तो गुम हो जायेगा. अल्पकाल क्षण भंगुर सुख की आशा पूरी होगी. साक्षात्कार की चाहना थी वह मिला. अब तुम जानते हो यहाँ ज्ञान में मूल बात है पतित से पावन बनने की. पावन बनेंगे तो देवता बन जायेंगे अर्थात स्वर्ग में चले जायेंगे.

- बाबा कहते है भक्ति के शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है. समझते हैं कलियुग में अजुन ४० हजार वर्ष पड़े हैं. बाबा समझाते है सारा कल्प ही ५ हजार वर्ष का है. द्वापर से रावण जब आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान हैं. बाप तुम्हें सारे कल्प में एक ही बार ज्ञान का वर्सा देते है.

- बाबा कहते है भक्ति में भगवान (परमात्मा-बाप) को कोई भी जानते नहीं और बाप को गाली ही देते रहते हैं. अभी ज्ञान में तुम समझते हो. तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं, वह हम आत्माओं का बाप हैं और वह कहते है की नहीं परमात्मा ठिक्कर-भित्तर में हैं. अभी तुम बच्चों ने समझा है कि भक्ति बिल्कुल अलग चीज है उनमें जरा भी ज्ञान नहीं होता. अभी बाप आकर ज्ञान से रावण राज्य वेश्यालय को राम राज्य शिवालय बनाते हैं.

ॐ शांति.